بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -23
Issue - 09

राह-ए-ईमान

सितम्बर
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2

2. पवित्र हदीस 2

3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3

4. रूहानी ख़ज़ायन (गुनाह से मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है?).....4

5. सम्पादकीय (जमाअती इज्तिमाओं के आयोजन का उद्देश्य).....6

6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः 13-08-2021.....08

7. हुज़ूर अनवर से किए जाने वाले प्रश्न तथा उनके उत्तर 12

8. कैनेडा के अत्फ़ाल (बच्चों) की हुज़ूर अनवर के साथ पहली Virtual क्लास.....21

9. नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह हॉलैंड और नौमुबाईनात और विद्यार्थियों की अपने प्यारे इमाम से वर्चूअल मुलाक़ात.....25

10. नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह कैनेडा की अपने प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन से वर्चूअल मुलाक़ात.....28

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَ لَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَ اِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا

अनुवाद:- हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह की ख़ातिर गवाह बनते हुए न्याय को दृढ़तापूर्वक स्थापित करने वाले बन जाओ चाहे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देनी पड़े या माता-पिता और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ़। चाहे कोई अमीर हो या ग़रीब दोनों का अल्लाह ही बेहतरीन संरक्षक है। अत: अपनी इच्छाओं की पैरवी न करो, ऐसा न हो अन्याय करो। और अगर तुमने गोल मोल बात की या सच्ची बात को टाल गए तो यक़ीनन अल्लाह जो तुम करते हो उससे भली भांति परिचित है (सूरह निसा आयत- 136)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत जरीर पुत्र अब्दुल्लाह रज़ि. वर्णन करते हैं कि हम लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित थे। रात्रि का समय था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चौदहवीं के चांद की ओर देखा और फ़र्माया तुम अपने ख़ुदा को इसी प्रकार बिना किसी बाधा या रुकावट के देखोगे जिस तरह इस चौदहवीं के चांद को देख रहे हो यदि तुम इस महानता को प्राप्त करना चाहते हो तो फज्र तथा अस्र की नमाज़ समय पर पढ़ने में चूक न होने दो। (बुख़ारी किताबुल तौहीद)

हज़रत आइशा (रज़ि) वर्णन करती हैं कि सूर: "इज़ा जाअ नस्रुल्लाहे वल्फ़तहे", नाज़िल होने के बाद भी आप नमाज़ पढ़ते तो इस में यह दुआ बहुत अधिक मांगते कि- हे हमारे परवरदिगार! तू पवित्र है, हम तेरी स्तुति करते हैं, हे अल्लाह तआला! तू मुझे माफ कर दे।

(बुख़ारी किताबुल्त फसीर)

☆ ☆ ☆

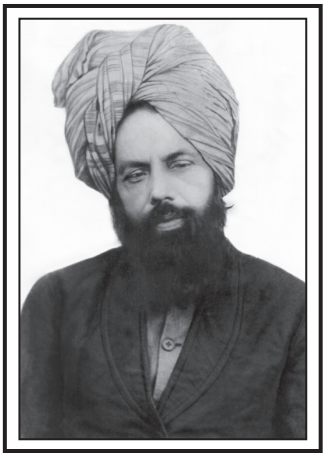

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

क़ुर्आन, सुन्नत और हदीस

फिर आपने स्पष्ट तौर पर इस विषय पर चर्चा की कि हमारे निकट तीन चीज़ें हैं एक अल्लाह की किताब (अर्थात क़ुर्आन) दूसरी सुन्नत अर्थात रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम का कर्म और तीसरी हदीस। हमारे विरोधियों ने धोखा खाया है कि सुन्नत और हदीस को परस्पर मिला दिया है। हमारा मत हदीस के बारे में यही है कि जब तक वह क़ुर्आन तथा सुन्नत की स्पष्ट रूप से विरोधी और विपरीत न हो उसको छोड़ना नहीं चाहिए चाहे वह मुहद्दसीन के निकट ज़ईफ से ज़ईफ (कमज़ोर से कमज़ोर) ही क्यों न हो। जबकि हम अपनी भाषा में दुआएं कर लेते हैं तो क्यों हदीस में आई हुई दुआएं न करें जबकि वह क़ुर्आन की विरोधी भी नहीं। पवित्र क़ुर्आन पर हदीस को निर्णायक बनाना बड़ी गलती है और पवित्र क़ुर्आन का अपमान है। हज़रत उमर रजि अल्लाह के सम्मुख एक बुढ़िया ने हदीस प्रस्तुत की तो उन्होंने यही कहा कि मैं एक बुढ़िया के लिए क़ुर्आन नहीं छोड़ सकता। ऐसा ही हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह अन्हा के सम्मुख किसी ने कहा कि हदीस में आया है मातम करने से मुर्दे को कष्ट होता है तो उन्होंने यही कहा कि पवित्र क़ुर्आन में तो आया है-

لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى (सूरह अल अनाम - 165)

अनुवाद - कोई जान किसी दूसरे (के पाप) का भोझ नहीं उठाएगा।

अत: क़ुर्आन पर हदीस को निर्णायक बनाने में अहले हदीस ने सख्त ठोकर खाई है।

असल बात यह है कि अपनी मोटी अकल के कारण यदि कोई चीज़ पवित्र क़ुर्आन में न मिले तो उसको सुन्नत में देखो और फिर आश्चर्य की बात यह है कि जिन बातों में उन लोगों ने क़ुर्आन का विरोध किया है स्वयं उनमें मतभेद है। उन की न्यूनाधिकता ने हमको सीधे तथा असल मार्ग दिखा दिए जैसे यहूदियों और ईसाइयों की न्यूनाधिकता ने इस्लाम (धर्म दुनिया में) भेज दिया।

अत: सच्चाई यही है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत के द्वारा निरंतरता दिखा दी है और हदीस एक इतिहास है उसको सम्मान देना चाहिए। सुन्नत का दर्पण हदीस है। विश्वास पर अनुमान कभी निर्णायक नहीं होता क्योंकि अनुमान में झूठ की मिलौनी का संदेह होता है। इमामे आज़म रहमतुल्ला अलैहि का मत कद्र करने योग्य है उन्होंने क़ुर्आन को प्राथमिकता दी है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ- 303-304)

रूहानी ख़ज़ायन

गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है?

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

...तुम्हारा प्रतिदिन का अनुभव है कि जब एक वस्तु का हानिप्रद होना सिद्ध हो जाए तो दिल तुरन्त उससे डरने लगता है। उदाहरणतया जिस को यह मालूम नहीं कि यह वस्तु जो मेरे हाथ में है यह संखिया है वह उसको कोई लाभप्रद दवा समझ कर एक ही समय में तोला या दो तोला तक भी खा सकता है परन्तु जिसको इस बात का अनुभव हो चुका है कि यह तो घातक ज़हर है वह एक माशा के बराबर भी उसे इस्तेमाल नहीं कर सकता। क्योंकि वह जानता है कि उसके खाने के साथ ही संसार से विदा हो जाएगा। इसी प्रकार जब मनुष्य को वास्तविक तौर पर मालूम हो जाता है कि निस्संदेह ख़ुदा मौजूद है और वास्तव में सब प्रकार के गुनाह उसकी दृष्टि में दण्डनीय हैं। जैसे चोरी, रक्तपात, व्यभिचार, अन्याय, बेईमानी, शिर्क, झूठी गवाही देना धोखा देना वचन भंग करना, लापरवाही, नशे की मस्ती में जीवन गुज़ारना, ख़ुदा का कृतज्ञ न होना, ख़ुदा से न डरना, उसके बन्दों के साथ सहानुभूति न करना, ख़ुदा को भय युक्त दिल के साथ स्मरण न करना, भोग-विलास और संसार के आनन्दों में पुर्णतया लीन हो जाना, सच्ची नेमतें देने वाले (ख़ुदा) को भुला देना, दुआ और विनय से कुछ मतलब और संबंध न रखना, बेचने वाली वस्तुओं में खोट मिलाना या तोल में कमी करना या बाज़ार से कम मूल्य पर बेचना, माता पिता की सेवा न करना, पत्नियों से अच्छा मेल मिलाप न रखना, पति का पूर्ण रूप से आज्ञापालन न करना, नामहरम[1] ⁕ (वैध) पुरुषों या स्त्रियों को बुरी नज़र से देखना, अनाथों, असहायों, निर्बलों, कमज़ोरों, दुखी लोगों की कुछ परवाह न करना, पड़ोसी के अधिकारों का कुछ भी ध्यान न, रखना और उसे कष्ट देना, अपनी बड़ाई सिद्ध करने के लिए दूसरे का अपमान करना, किसी को दिल दुखाने वाले शब्दों के साथ ठटठा करना या अपमान के तौर पर उसका कोई बुरा उपनाम रखना या उस पर कोई अनुचित इल्ज़ाम लगाना या ख़ुदा पर झूठ गढ़ना और नऊज़ु बिल्लाह नुबुव्वत या रिसालत या ख़ुदा की और से होने का झूठा दावा कर देना या ख़ुदा तआला की हस्ती से इन्कारी हो जाना या एक न्यायवान बादशाह से बग़ावत करना, और शरारत से देश में उपद्रव फैलाना। तो ये समस्त गुनाह उस जानकारी के बाद कि प्रत्येक के करने से दण्ड का होना एक आवश्यक बात है स्वयं छूट जाते हैं।

शायद फिर कोई धोखा खा कर फिर यह प्रश्न प्रस्तुत कर दे इस के बावजूद कि जानते हैं कि ख़ुदा मौजूद है और यह भी जानते हैं कि गुनाहों का दण्ड होगा फिर भी हम से गुनाह होता है, इसलिए हम किसी अन्य माध्यम के मुहताज हैं। तो हम उस का वही उत्तर देंगे जो पहले दे चुके हैं कि हरगिज़ संभव नहीं किसी प्रकार संभव नहीं है कि तुम इस बात की पूरी प्रतिभा प्राप्त कर के कि गुनाह करने के साथ ही

⁕ **नामहरम -** इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति जिस से निकाह वैध है और वह व्यक्ति जिस से स्त्री का पर्दा आवश्यक है। (अनुवादक)

एक बिजली के समान तुम पर दण्ड की आग बरसेगी फिर भी तुम गुनाह पर दिलेर हो सकोगे। यह ऐसी फ़िलास्फ़ी है जो किसी प्रकार टूट नहीं सकती। सोचो और ख़ूब सोचो कि तुम्हें जहां जहां दण्ड पाने का पूर्ण विश्वास प्राप्त है वहां तुम उस विश्वास के विरुद्ध कोई हरकत नहीं कर सकते। भला बताओ तुम आग में अपना हाथ डाल सकते हो, क्या तुम पहाड़ की चोटी से अपने आप को नीचे गिरा सकते हो? क्या तुम कुएं में गिर सकते हो? क्या तुम चलती हुई रेल के आगे लेट सकते हो? क्या तुम शेर के मुंह में अपना हाथ डाल सकते हो? क्या तुम पागल कुत्ते के आगे अपना पैर कर सकते हो? क्या तुम ऐसी जगह ठहर सकते हो जहां बड़े भयानक रूप में बिजली गिर रही हो? क्या तुम ऐसे घर से शीघ्र बाहर नहीं निकलते जहां शहतीर टूटने लगा है या भूकम्प से पृथ्वी धंसने लगी है? भला तुम में से कौन है जो एक ज़हरीले सांप को अपने पलंग पर देखे और शीघ्र कूद कर नीचे न आ जाए। भला एक व्यक्ति का नाम तो लो कि जब उस के कोठे को जिस के अन्दर वह सोता था आग लग जाए तो वह सब कुछ छोड़ कर बाहर न भाग जाए। तो अब बताओ ऐसा तुम क्यों करते हो और क्यों इन समस्त चीज़ों से अलग हो जाते हो परन्तु वे गुनाह की बातें जो मैंने अभी लिखी हैं उन से अलग नहीं होते। इस का क्या कारण है? तो याद रखो कि वह उत्तर जो एक बुद्धिमान पूरी सोच और बुद्धि के बाद दे सकता है वह यही है कि इन दोनों स्थितियों में ज्ञान का अन्तर है। अत: ख़ुदा के गुनाहों में प्राय: मनुष्य का ज्ञान अधूरा है वे गुनाहों को बुरा तो जानते हैं परन्तु शेर और सांप की भांति नहीं समझते और गुप्त तौर पर उन के दिलों में यह विचार हैं कि यह दण्ड निश्चित नहीं हैं यहां तक कि ख़ुदा के अस्तित्त्व पर भी उन को सन्देह है कि वह है भी या नहीं और अगर है भी तो क्या ख़बर रूहों को मरने के बाद अनश्वरता (बक़ा) है या नहीं और यदि अनश्वरता है भी तो फिर क्या मालूम कि उन अपराधों का कुछ दण्ड भी है या नहीं नि:सन्देह बहुत से लोगों के दिलों के अन्दर यही विचार छुपा हुआ मौजूद है। जिस पर उन्हें सूचना नहीं। परन्तु वे भय के समस्त स्थान जिन से वे बचते हैं जिस के मैं कुछ उदाहरण लिख चुका हूं उन के सम्बन्ध में सब को विश्वास है कि इन चीज़ों के निकट जाकर हम मर जाऐंगे। इसलिए उन के निकट नहीं जाते बल्कि ऐसी घातक वस्तुएं यदि संयोग से सामने भी आ जाएं तो चीख़ें मार कर उन से दूर भागते हैं तो मूल वास्तविकता यही है कि इन वस्तुओं को देखने के समय मनुष्य को अटल विश्वास है कि उन का इस्तेमाल मौत का कारण है परन्तु धार्मिक आदेशों में अटल विश्वास नहीं है बल्कि केवल गुमान है और उस जगह देखना है और यहां केवल कहानी है। अत: अनसुनी कहानियों से गुनाह हरगिज़ दूर नहीं हो सकते। मैं इस लिए तुम्हें सच सच कहता हूं कि यदि एक मसीह नहीं हज़ार मसीह भी सलीब पर मर जाएं तो वे तुम्हें वास्तविक मुक्ति हरगिज़ नहीं दे सकते। क्योंकि गुनाह से या पूर्ण भय छुड़ाता है या पूर्ण प्रेम। और मसीह का सलीब पर मरना प्रथम स्वयं झूठ और फिर उस को गुनाह का जोश बन्द करने से कोई सम्बन्ध नहीं। सोच लो कि यह दावा अंधकार में पड़ा हुआ है जिस पर न अनुभव गवाही दे सकता है और न मसीह की आत्महत्या की हरकत को दूसरों के गुनाह माफ किए जाने से कोई सम्बन्ध पाया जाता है। (पुस्तक- गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है? पृष्ठ 24-27)(शेष...)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

जमाअती इज्तिमाओं के आयोजन का उद्देश्य

प्रिय खुद्दाम भाइयो! सितम्बर तथा अक्टूबर का महीना सम्पूर्ण भारत में मज्लिस खुद्दाम अहमदिया के इज्तिमाओं (समायोजनों) के महीने हैं जिनमें पहले तो लगभग हर राज्य में राज्य स्तर पर इज्तिमा का आयोजन होता है और फिर अक्टूबर के महीने में राष्ट्रीय स्तर का वार्षिक इजतिमा क़ादियान पंजाब में आयोजित किया जाता है। जिसमें भाग लेने के लिए भारत के हर कोने से खुद्दाम और अतफ़ाल क़ादियान आते हैं। इस अवसर पर जहां खेल कूद की प्रतियोगिताएं होती हैं वहीं शैक्षणिक प्रतियोगिताएं (अर्थात नज़म, तिलावत, तक़रीर इत्यादि) भी होती हैं परन्तु इन इज्तिमाओं का उद्देश्य केवल यही प्रतियोगिताएं नहीं हैं कि क़ादियान आएं और खेलकूद कर वापस चले जाएं बल्कि अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न करना भी है, जिसमें विशेष रूप से बाजमाअत नमाजों का प्रबंध करना है, बैतुददुआ, मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक्सा, बहिश्ती मक़बरा आदि में दुआएं करना भी है। यहाँ आकर पवित्र स्थलों के दर्शन करना और दर्शन करते हुए हज़रत मसीह मऊओओड़ अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के उद्देश्य को याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने किस उद्देश्य लिए आपको संसार में भेजा था। और वह यही था जो एक अवसर पर आपने फरमाया कि मैं दो मक़सद लेकर दुनिया में पैदा हुआ हूँ एक मनुष्य का संबंध उसके स्रष्टा (खुदा) से जोड़ने के लिए और दूसरे मानवजाति के बीच परस्पर प्रेम भाव पैदा करने के लिए। अत: प्रिय खुद्दाम भाइयो! हमें और आपको हर समय इन बातों को अपने सामने रखना है कि अल्लाह, खुदा, परमेश्वर के साथ हमारा एक विशेष संबंध हो, उसके हर आदेश का हम पालन करने वाले हों, हर बुराई से हम बचने वाले हों और दुनिया के हर इंसान से चाहे वह हमारा परिचित है या नहीं प्रेम और सम्मान पूर्वक व्यवहार करने वाले हों। यदि हम ऐसा करेंगे तब हम हज़रत मसीह मौऊद के आगमन के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे और तब खुदा भी हमसे प्रसन्न होगा। मज्लिस खुद्दाम अहमदिया के संस्थापक एक अवसर पर इसी विषय की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करवाते हुए फरमाते हैं-

"इज्तिमा के मौक़ा पर भाग लेने के लिए आए हुए आप को मैं इस ओर तवज्जो दिलाना चाहता हूँ कि आप अपनी उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करें जो आप पर इस अहमदियत को स्वीकारने नतीजा में लागू होती हैं। इन्हीं ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों की तरफ़ तवज्जो दिलाते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अ. फ़रमाते हैं: "ये मत ख़्याल करो कि हम इस जमाअत में सम्मिलित हैं, मैं तुम्हें सच्च-सच्च कहता हूँ कि हर एक जो बचाया जाएगा अपने पूर्ण ईमान के द्वारा बचाया जाएगा। क्या एक दाने से तुम्हारा पेट भर सकता है? या एक बूंद पानी तुम्हारी प्यास बुझा सकता है? इसी तरह अधूरा ईमान तुम्हारी रूह को कुछ भी फ़ायदा नहीं दे सकता। आसमान पर वही मोमिन लिखे जाते हैं जो वफ़ादारी और सच्चाई से और पूरी मज़बूती से और सचमुच ख़ुदा को समस्त चीज़ों पर प्राथमिकता देकर अपने ईमान पर मुहर लगाते हैं।" (मशअल-ए-राह जिल्द-2 पृष्ठ- 724-25)

अत: इसी के अनुसार हमें इन इज्तिमाओं से लाभ उठाते हुए अपने ईमान को पूर्ण करने और खुदा तआला से दिल लगाने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि हम इस जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त कर सकें।

बैअत करने से क्या अभिप्राय है

अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 4 मार्च 1889 ई. को एक और अख़बार में अपनी बैअत के अभिप्राय पर प्रकाश डालते हुए लिखा कि :

"यह बैअत का सिलसिला सिर्फ़ मुत्तक़ीन के गिरोह को पाने के लिए अर्थात परहेज़गार और संयमी लोगों की जमाअत को एकत्र करने के लिए है ताकि परहेज़गार और संयमी लोगों का एक बड़ा गिरोह दुनियाँ पर अपना नेक असर डाले और उनकी एकता इस्लाम के लिए बरकत एवं बड़ाई और अच्छे परिणामों का कारण हो। वही एक कलमा की बरकत से एकमत होने के इस्लाम की पाक और मुक़द्दस ख़िदमतों में जिल्द काम आ सकें। और एक आलसी, और कंजूस एवं बेकार मुसलमान न हों। और न उन नालायक लोगों की तरह हों जिउन्होंने अपने मतभेद और फूट के कारण इस्लाम को अत्याधिक नुकसान पहुँचाया है। और उसके खूबसूरत चेहरे पर अपने दुराचरण से दाग़ लगा दिया है और न ऐसे बेख़बर दर्वेशों और एकांत वासियों की तरह हों जिनको इस्लामी ज़रूरतों की कुछ भी परवाह नहीं, और अपने भाईयों की हमदर्दी से कुछ भी मतलब नहीं। और इन्सानों की भलाई के लिए कोई जोश नहीं। बल्कि वह इस तरह जाती के हमदर्द हों कि ग़रीबों का सहारा बन जायँ, यतीमों (अनाथों) के लिए पिता समान हो जाएँ। और इस्लामी कार्यों के करने के लिए सच्चे प्रेमी की तरह तैयार हों, और सारी कोशिशें इस बात के लिए करें कि उनकी सारी बरकतें दुनिया में फैलें। और ख़ुदा की मुहब्बत और ख़ुदा के बन्दों की हमदर्दी का पाक चश्मा (स्त्रोत) प्रत्येक दिल से निकलकर और एक जगह इकट्ठा होकर एक नदी की तरह बहता हुआ नज़र आये... ख़ुदा तआला ने अपना प्रताप ज़ाहिर करने के लिए और ख़ुदाई ताक़त दिखलाने के लिए इस गिरोह को पैदा करना और फिर तरक्की देना चाहा, ताकि दुनिया में ख़ुदा की मुहब्बत और सच्ची तौबा और पाकीज़गी (परहेज़गारी) और असल नेकी और मैत्री तथा इन्सानों की हमदर्दी को फैला दे। अतएव यह गिरोह उसका एक विशेष गिरोह होगा और वह उन्हें स्वयं अपनी रूह से ताक़त देगा और उन्हें गन्दी ज़िन्दगी से साफ़ करेगा और उनकी ज़िन्दग़ी में एक पाक तब्दीली प्रदान करेगा। और जैसा कि उसने अपनी पवित्र भविष्यवाणियों में वादा फ़रमाया है इस गिरोह को बहुत बढ़ायेगा और हज़ारों सच्चों को इसमें दाख़िल करेगा। वह स्वयं इसकी सिंचाई करेगा, और इसको तरक्की देगा। यहाँ तक कि उसकी अधिकता और बरकत नज़रों में आश्चर्यजनक हो जायेगी। और वह उस दीपक की तरह जो ऊँची जगह पर रखा जाता है दुनिया के चारों तरफ अपनी रोशनी फैलायेंगे। और इस्लामी बरकतों के लिए नमूना की तरह ठहरेंगे। वह इस सिलसिला के पूर्ण एवं सच्चे अनुयायियों को हर प्रकार की बरकत में दूसरे सिलसिला वालों पर विजय प्रदान करेगा। और हमेशा क़ायमत तक उनमें ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे, जिनतो क़ुबूल किया जायेगा और उनको मदद दी जायेगी। उस महान ख़ुदा ने यही चाहा है। वह सर्वशक्तिमान है जो चाहता है करता है। हर एक ताक़त और सामर्थ्य उसी को है।"

इसी विज्ञापन में आपने निर्देश दिया कि बैअत करने वाले दोस्त 20 मार्च के बाद लुधियाना पहुँच जायें।

(मज्मुआ इश्तिहारात, जिल्द प्रथम पृष्ठ 196 से 198)

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक - 13.8.2021 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

जलसा सालाना यू.के. २०२१ के बाबरकत तथा सफल आयोजन के बारे में अनुभूति तथा अल्लाह की कृपाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अलहमदुल्लिाह, पिछले जुम्अ: को जमाअत-ए-अहमदिया बर्तानिय: का जलसा सालाना एक साल के अंतराल के बाद, अथवा कहना चाहिए कि दो साल के बाद शुरु होकर तीन दिन तक अपने रूहानी माहौल के नज़ारे दिखाता, पिछले इतवार को सम्पन्न हुआ। करोना महामारी के कारण इस वर्ष भी प्रस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं तथा व्यवस्थापक यही समझ रहे थे कि इस वर्ष भी जलसा नहीं होगा। जब उन्हें कहा गया कि इन्शाअल्लाह इस वर्ष जलसे का आयोजन होगा तो यद्यपि व्यवस्थापकों ने तय्यारी आरम्भ कर दी किन्तु पूरे मन के साथ तय्यारी नहीं कर रहे थे। यहाँ तक कि एक अवसर पर मुझे कठोर शब्दों में कहना पड़ा कि यदि आप लोग इस सोच में रह कर कि जलसा होता भी है कि नहीं, उचाट मन से काम करते रहे तो फिर मैं नए व्यवस्थापक नियुक्त कर देता हूँ। मेरी इस बात ने उन्हें झटका दिया और तेज़ी से काम शुरु हो गया। कार्यकर्ता जो मूल शक्ति हैं, वे तो लगता था कि पहले ही व्याकुल थे, अत: हर एक दिशा से कार सेवक आना शुरु हो गए। जलसा चूँकि छोटे स्तर का होना था इस लिए इच्छुक कार सेवकों में से कार्यकर्ता चुने गए। जिन्हें सेवा का अवसर नहीं मिला, उन्हें मैं यह कहना चाहता हूँ कि आपको कुछ कारण वश अवसर नहीं मिल सका परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करने की धारणा आपकी पूरी हो गई तथा अल्लाह तआला आपको उसके बदले से वंचित नहीं करेगा।

जैसा कि मेरा तरीक़ा है कि जलसे के बाद के जुम्अ: में कार्यकर्ताओं तथा कार सेवकों को धन्यवाद

देता हूँ, लोग भी दुनिया भर से मुझे पत्र भेज कर कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दे रहे हैं। वर्षा तथा कीचड़ के कारण पार्किंग में जो समस्या पैदा हो गई थी, एम.टी.ए. के माध्यम से दुनिया भर के लोगों ने देखा कि कार्यकर्ता तथा कार सेवक गाडिय़ों को कीचड़ से निकालने के लिए स्वयं कीचड़ में लतपत हो गए। इस भावना पर अपनों तथा ग़ैरों, सबने आश्चर्य प्रकट किया।

इसी प्रकार सफ़ाई विभाग, खाना खिलाना, खाना पकाना, रोटी पकाना तथा सबसे महत्त्व पूर्ण जलसे की मार्कियाँ लगाना, ट्रेक बिछाना, इन कामों के लिए कार सेवक निरन्तर कई सप्ताह तक आते रहे तथा अब वाईंड अप के लिए भी कई दिन दे रहे हैं। एम टी ए ने भी बड़ी मेहनत से प्रोग्राम बनाए तथा न केवल दुनिया को जलसा दिखाया बल्कि हमें जलसागाह में, विभिन्न देशों में सामूहिक रूप से जलसा देखने वालों के दृश्य दिखाकर मानो एक अद्भुत अन्तर्राष्ट्रीय घर का चित्रण कर दिया। अत: मैं समस्त कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इन कठिन प्रस्थितियों में नि:स्वार्थ होकर काम किया।

मेरा विचार था कि कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करके मैं अपने नियम के अनुसार विषय को बयान करूँगा किन्तु दुनिया भर से जलसा सुनने वालों की भावनाओं तथा आभास की इतनी मूल्यवान अभिव्यक्ति, कि मैंने सोचा कि आज के ख़ुत्ब: में सदैव की भांति इन अभिव्यक्तियों तथा कृपाओं का वर्णन कर दूँ।

इस वर्ष के विशेष प्रबन्ध के साथ होने वाले जलसे ने अल्लाह तआला की कृपाओं के ऐसे द्वार खोले हैं, जिससे फिर इंसान अल्लाह तआला के प्रति आभार प्रकट करते हुए उसके आगे झुकता चला जाता है। कैसे कैसे फ़ज़्ल अल्लाह तआला जमाअत पर फ़रमा रहा है। इन समस्त प्रस्थितियों के बावजूद एक कमी भी लोगों ने बताई है कि इस साल विश्व स्तरीय बैअत नहीं हुई जिसकी उन्हें बड़ी प्रतीक्षा थी, तो अतएव इन प्रस्थितियों में यह कठिन भी था कि बैअत की जाती, मजबूरी थी।

इस वर्ष पहली बार लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से भिन्न भिन्न जमाअतें अपने अपने स्थानों पर बैठ कर जलसे में शामिल हुईं। यू.के. में पाँच स्थानों पर यह व्यवस्था थी, जबकि यू.के. के अतिरिक्त बाईस देशों में सैंतीस स्थानों पर इस माध्यम से लोग जलसे में शामिल हुए । इन देशों में अमरीक, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, बंगला देश, मारीशस, कबाबीर, भारत, बोरकीना फ़ासो, घाना, नाईजेरिया, गैम्बिया, तंज़ानिय:, फ्रांस, स्वीज़र लैंड, जर्मनी, स्वीडन, बैल्जियम, फिन लैंड, हॉलैंड इत्यादि शामिल हैं। एक अनुमान के अनुसार महिलाओं के सैशन को भी तीस पैंतीस हज़ार महिलाओं ने देखा और सुना।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया भर में फैले हुए विभिन्न दोस्तों तथा महिलाओं की अभिव्यक्तियाँ पेश फ़रमाईं। एक ग़ैर अज़-जमाअत जापानी दोस्त मशीमा ओसामू साहब जो हुज़ूर-ए-अनवर के जापान दौरे के अवसर पर मेज़बानी का सौभाग्य भी पा चुके हैं, उन्होंने कहा कि आज मैंने २ अगस्त का ख़ुत्ब: सुना तो मुझे जापान के लिए अहमदिया जमाअत की सेवाएँ याद आ गईं। आज जलसे का वातावरण तथा दुनिया भर से लोगों का समागम देख कर मेरे दिल में यह भावना पैदा होती है कि

विश्व को एक प्लेट फ़ॉर्म पर एकत्र करने तथा शांति और अमन के लिए अहमदिया जमाअत की भूमिका कितनी महत्त्व पूर्ण है।

ज़ैम्बिया से एक ईसाई टीचर ने जलसे की काररवाई सुन कर कहा कि आज मुझे पता लगा कि इस्लाम ही एक सच्चा धर्म है। नाईजेरिया के एक ग़ैर अज़-जमाअत दोस्त ने भारी बारिश के चलते कार सेवकों को काम में मगन देख कर कहा कि नि:सन्देह यह जमाअत सच्चों की जमाअत है। मसाका ज़ैम्बिया से एक ग़ैर अज़-जमाअत अध्यापक ने कहा कि आज मैंने आपके ख़लीफ़: से एक बात सीखी है कि इस्लाम ही वह अकेला धर्म है जो महिलाओं के अधिकारों पर बल देता है। नाईजेरिया में एक ग़ैर अहमदी मेहमान मरयम साहिबा ने कहा कि आज मुझे महिलाओं के कत्र्तव्यों तथा अधिकारों, दोनों का आभास हुआ है, लिखती हैं कि यदि अहमदियों का कर्म उनके कथन के अनुसार है तो आप लोगों से अच्छा मैंने कोई नहीं देखा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अत: हर एक अहमदी को अपने घरों में इस शिक्षा के नमूने भी दिखाने होंगे ताकि इस्लाम की इस वास्तविक शिक्षा का लोगों पर जो प्रभाव हुआ है वह स्थापित भी रहे। अहमदी पुरुष के लिए बड़े सोचने का क्षण है कि अपने व्यवहार अपने घरों में भी ठीक रखें, दुनिया को धोखा न दें।

कैमरून के नगर मर्वा के निकट एक गाँव के चीफ़ अलहाजी उसमान साहब ने कहा कि आज जलसे की काररवाई देख कर विश्वास हो गया है कि यह जमाअत वास्तव में इमाम मेहदी की जमाअत है। मलेशिया से एक नौ-मुबाय कहते हैं कि मैं जलसा सालाना यू.के. देख कर ख़ुदा तआला का अत्यधिक आभारी हूँ और वादा करता हूँ कि खिलाफ़त के साथ सदैव वफ़ादार तथा आज्ञा पालक रहूँगा। गिनी बिसाव में नौ-मुबाईयीन तथा ग़ैर अज़-जमाअत दोस्त जलसे की काररवाई देखने अठारह तथा तीस किलोमीटर की दूरी साईकिलों पर अथवा पैदल चल कर पहुंचे तथा उस अवसर पर १२७ लोगों ने अहमदियत क़बूल की। कांगो के एक ईसाई दोस्त ने अपनी पतनी से कहा कि यहाँ तीन दिनों में हमने जो कुछ सीखा है, ईसाईयत में रह कर पूरे जीवन में भी नहीं सीख सकते। गिनी बसाव के एक ग़ैर अज़-जमाअत दोस्त ने हुज़ूर-ए-अनवर के सम्बोधन सुन कर कहा कि इस्लाम को इस समय एक लीडर की आवश्यकता है तथा वह अहमदिया जमाअत के पास ख़लीफ़: के रूप में उपलब्ध है। इन साहब ने जलसे के अंत में बैअत करके अहमदियत में शमूलियत धारण कर ली। यमन से अकरम अहमद साहब ने कहा कि यदि ख़लीफ़-ए-वक्त का लजना वाला सम्बोधन पूरा समाज सुने तथा इसके अनुसार अमल करे तो समाज शत-प्रतिशत सुलझ जाए।

सारांश यह कि हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नाईजर, ज़ैम्बिया, गैबून, नाईजेरिया, गिनी कनाकरी, कैमरून, माली, तंज़ानिय:, मलेशिया, बराज़ील, गिनी बसाव, गयाना, मारीशस, आस्टरिया, आयवरी कोस्ट, कांगो बराज़ावैल, सैनिगाल, यमन, उर्दन, शाम, जर्मनी, इंडोनेशिया, कर$गिस्तान, आस्ट्रेलिया, बराज़ील, गोएटे माला तथा अलबानिय: इत्यादि देशों से अपने अपने स्थान पर

एम.टी.ए. अथवा अन्य माध्यमों से जलसे के समारोह में शामिल होने तथा लाभान्वित होने वाले अहमदी दोस्त तथा महिलाएँ तथा ग़ैर अज़-जमाअत दोस्तों की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ पेश फ़रमाईं। दुनिया भर के विभिन्न क्षेत्रों तथा स्थानों में आबाद, विभिन्न रंग व नस्ल तथा भाषाएँ बोलने वाले, इन सभी दोस्तों तथा महिलाओं ने जलसे की सुन्दर व्यवस्था तथा रूहानी वातावरण और हुज़ूर-ए-अनवर के विवेक पूर्ण सम्बोधनों से समान रूप में लाभान्वित होने का वर्णन किया तथा जलसे में शामिल होने के बाद अहमदियत क़बूल करने के भी कुछ ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन फ़रमाया।

जलसा सालाना के अवसर पर यू.के. के प्रधान मंत्री तथा कैनेडा के प्रधान मंत्री सहित विभिन्न मंत्रियों तथा मुखियाओं के सद्भावना संदेश आए। इसी प्रकार बर्तानिया के अतिरिक्त ९ देशों से १०९ सन्देश प्राप्त हुए। इन देशों में अमरीका, सीरालियोन, गैम्बिया, सिनेगाल, कीनिया, स्पेन, हॉलैंड तथा जर्मनी शामिल हैं।

अल्लाह तआला की कृपा से एम.टी.ए. अफ़रीक़ा के अतिरिक्त जलसा सालाना के प्रसारण कुछ अन्य स्थानीय टी वी चैनल्ज़ पर भी प्रसारित किए गए। अफ़रीक़ा में पचास मिलयन लोगों से अधिक की भाषा हाउसा में पहली बार अनुवाद हुआ। अफ़रीक़ा में १६ टी वी चैनल्ज़ ने जलसा सालाना के विषय में समाचार प्रसारित किए। बी.बी.सी. साउथ ने जलसे के बारे में डाकूमैन्ट्री चलाई तथा बी.बी.सी. वर्लड ने रिपोर्ट प्रसारित की। चालीस वैबसाईट्स ने जलसे के समाचार प्रसारित किए। जलसे के बारे में १६ रेडियो प्रोग्राम का प्रसारण हुआ। बीस समाचार पत्रों में जलसे के बारे में आ्टकल इत्यादि प्रकाशित हुए। बारह टी वी चैनल्ज़ ने जलसे के समाचार प्रसारित किए। इन समस्त माध्यमों के अतिरिक्त सोशल मीडिया के द्वारा भी अनुमानत: तरेसठ लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। बंगला देश के दस ऑन लाईन पोरटर्स तथा अख़बारों में जलसे के समाचार चित्र के साथ प्रकाशित हुए। यूट्यूब पर १५ मिलयन से अधिक लोगों ने विज़िट किया। इंस्टाग्राम पर पैंतीस हज़ार लोगों ने एम.टी.ए. का पेज देखा तथा १.९७ मिलयन लोगों तक इसकी पहुंच हुई। ट्यूटर पर एक लाख से अधिक लोगों ने एम टी ए का पेज देखा। फ़ेस बुक के माध्यम से साढ़े पाँच लाख लोगों तक सन्देश पहुंचा। एम.टी.ए. की अपनी वैब साईट को एक लाख बार देखा गया। एम.टी.ए. ऑन डिमांड के द्वारा भी दो लाख से अधिक दोस्तों ने जलसा देखा।

ख़ुत्ब: के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तआला इस जलसे के दूर-गामी परिणाम भी फ़रमाए तथा दिव्य आत्माओं को अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम की ओर पहले से बढ़ कर आकर्षण हो और अल्लाह तआला तथाकथित ज्ञानियों के उपद्रव से जमाअत तथा समस्त दिव्य आत्माओं को सुरक्षित रखे, आमीन।

☆ ☆ ☆

विभिन्न अवसरों पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से किए जाने वाले प्रश्न तथा उनके उत्तर

प्रश्न : गुलशने वक़्फ़-ए-नौ आस्ट्रेलिया तिथि 12 अक्तूबर 2013 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रश्न किया कि बच्चियों को स्कार्फ किस आयु में लेना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का उत्तर इरशाद फ़रमाते हुए फ़रमाया :

उत्तर : जब तुम पाँच वर्ष की हो जाओ तो उस वक़्त तुम्हें बग़ैर Leggings के फ्राक नहीं पहननी चाहिए, तुम्हारी टांगें ढकी होनी चाहिऐं ताकि तुम्हें एहसास हो कि आहिस्ता-आहिस्ता हमारा ड्रैस जो है वह Cover होना चाहिए। Sleeveless फ्राक नहीं पहननी चाहिए। फिर छः सात वर्ष की हो जाओ तो तुम्हारी Leggings में और एहतियात हो। और जब तुम दस वर्ष की हो जाती हो तो थोड़ा सा स्कार्फ लेने की आदत डालो। और जब ग्यारह वर्ष की हो जाओ तो फिर स्कार्फ पूरी तरह लो। स्कार्फ लेने में तो कोई हर्ज नहीं? स्कार्फ तो यहां भी लोग सर्दियों में ले लेते हैं। सर्दी होती है तो अपने कान नहीं लपेट लेते? वह स्कार्फ ही होता है। उस तरह का स्कार्फ लो।

कुछ लड़कियां होती हैं, जो दस वर्ष की आयु में भी छोटी सी नज़र आती हैं। और कुछ ऐसी होती हैं जो दस वर्ष की आयु में 12 वर्ष की लड़की की तरह नज़र आती हैं, उनके क़द लंबे हो जाते हैं। तो हर लड़की देखे कि वह यदि बड़ी बड़ी नज़र आती है, तो उस को स्कार्फ ले लेना चाहिए। छोटी आयु में स्कार्फ लेने की आदत डालोगी तो फिर शर्म नहीं आएगी, नहीं तो सारी ज़िन्दगी शरमाती रहोगी। यदि तुम कहोगी कि 12 वर्ष की आयु में, तेराह वर्ष की आयु में, चौदह वर्ष की आयु में जा कर स्कार्फ लूँगी, तो फिर सोचती रहोगी और फिर तुम्हें शर्म आ जाएगी। फिर तुम कहोगी ओहो कहीं लड़कियां मेरा मज़ाक़ नहीं उड़ाएं। मैंने स्कार्फ लिया तो वे मुझ पर हँसेंगी। इसलिए कभी कभी स्कार्फ लेने की आदत डालो। सात, आठ, नौ वर्ष की आयु में स्कार्फ लेना शुरू कर दो, और लड़कियों के सामने भी ले लो ताकि तुम्हारी शर्म ख़त्म हो जाए और जब तुम बड़ी नज़र आओ तो तुम पूरी तरह स्कार्फ लो। ठीक है, समझ आई? तुम्हारे लिए इतना काफ़ी है और बड़ी लड़कियों के लिए इतना काफ़ी है कि असल चीज़ पर्दे का उद्देश्य यह है कि लज्जा होनी चाहिए और यह जो यूरोपियन हैं वेस्टर्न Influence के अंदर आते हैं, पुराने ज़माना में उनके लिबास भी यहां तक होते थे (इस अवसर पर हुज़ूर अनवर ने अपने हाथों की कलाइयों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया। संकलनकर्ता), लंबी मैक्सी फ्राकस होती थीं। अब तो ये नंगे फिरते हैं नाँ?

प्रश्न यह है कि मर्द जो है वह अच्छा और Well Dressed उस वक़्त कहलाता है जब उसने ट्राउज़र पूरे पहने हों, कोट पहना हो, टाई लगाई हो। और महिलाओं को कहते हैं कि तुम Well Dressed उस वक़्त होगी, जब तुमने मिनी स्कर्ट पहनी हो। यह मुझे फ़लसफ़ा समझ नहीं आया।

इसलिए मर्दों को न देखो। और महिलाएं भी जो स्वयं अपने आपको नंगा करती हैं, अपनी बेइज़्ज़ती करवाती हैं। इसलिए अहमदी लड़की, अहमदी महिलाओं का सम्मान इसी में है कि अपनी लज्जा को क़ायम करे क्योंकि असल वस्तु लज्जा है और यह लज्जा है जो दूसरों को तुम्हारे पर ग़लत नज़र डालने से रोकती है।

प्रश्न : आस्ट्रेलिया के वाक़फ़ात-ए-नौ के इसी प्रोग्राम गुलशन वक़्फ़ नौ तिथि 12 अक्तूबर 2013 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रश्न किया कि हम रमज़ान के रोज़े किस आयु में रखना शुरू करें? इस के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : रोज़े तुम पर उस वक़्त फ़र्ज़ होते हैं जब तुम लोग पूरी तरह Mature हो जाओ। यदि तुम स्टूडैंट हो और तुम्हारी परीक्षा हो रही हैं तो उन दिनों में यदि तुम्हारी आयु तेराह, चौदह,पंद्रह वर्ष है तो तुम रोज़े न रखो। यदि तुम बर्दाश्त कर सकती हो तो पंद्रह सोला वर्ष की आयु में रोज़े ठीक हैं। लेकिन सधारणता फ़र्ज़ रोज़े जो हैं वे सतरह, अठारह वर्ष की आयु से फ़र्ज़ होते हैं, इस के बाद बहरहाल रखने चाहिऐं। बाक़ी शौक़िया एक, दो, तीन, चार रोज़े यदि तुमने रखने हैं तो आठ दस वर्ष की आयु में रख लो, फ़र्ज़ कोई नहीं हैं। तुम्हारे पर फ़र्ज़ होंगे जब तुम बड़ी हो जाओगी, जब रोज़ों को बर्दाश्त कर सकती हो। यहां(आस्ट्रेलिया संकलनकर्ता) विभिन्न मौसमों में कितना फ़र्क़ होता है? Day Light कितने घंटे की होती है? सेहरी और अफ़तारी में कितना फ़र्क़ होता है? 12 घंटे? और Summer में कितना होता है? 19 घंटे का होता है? हाँ तो बस 19 घंटे तुम भूखे नहीं रह सकते। यू.के में भी आजकल, जो पीछे गर्मियां गुज़री हैं, उनमें तुम्हारे रोज़े छोटे थे और वहां लंबे रोज़े थे। साढ़े अठारह घंटे के रोज़े थे। तो स्वीडन इत्यादि में बाईस घंटे के रोज़े होते हैं। तो वहां तो बहरहाल वक़्त को एडजस्ट करना पड़ता है। क्योंकि इतना लंबा रोज़ा भी नहीं रखा जा सकता। लेकिन बर्दाश्त उस वक़्त होती है जब तुम जवान हो जाती हो, कम से कम सतरह अठारह वर्ष की हो जाओ तो फिर ठीक है। फिर रोज़े रखों। समझ आई? तुम्हारे अम्मां अब्बा क्या कहते हैं? दस वर्ष की आयु में तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ हो गए हैं? लेकिन आदत डाला करो। छोटे बच्चों को भी दो तीन रोज़े हर रमज़ान में रख लेने चाहिऐं ताकि पता लगे कि रमज़ान आ रहा है। लेकिन रोज़े न भी रखने हों तो सुबह उठो अम्मां अब्बा के साथ सहरी खाओ, नफ़ल पढ़ो, नमाज़ें नियमित पढ़ो। तुम लोगों का, स्टूडैंटस का और बच्चियों का रमज़ान यही है कि रमज़ान में उठें ज़रूर और सेहरी खाएं, नमाज़ का एहतिमाम करें और इस से पहले दो या चार नफ़ल पढ़ लें। फिर नमाज़ें नियमित पढ़ें। क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें।

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 अक्तूबर 2020)

प्रश्न- एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रश्न किया कि इस्लाम में विभिन्न जानवरों का गोश्त किस आधार पर हलाल और हराम क़रार दिया जाता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 11अप्रैल 2016 ई. में इस का निम्नलिखित उत्तर दिया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : किसी चीज़ के हलाल या हराम होने के बारे में दीन-ए-इस्लाम का उसूल यह है कि हर वह काम

जिससे शरीयत मना न करे, जायज़ है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं
"असल वस्तुओं में जाएज़ होना है निषेध जब तक स्पष्ट प्रमाणों से प्रमाणित न हो तब तक नहीं होती।"
(मलफ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 474)

क़ुरआन-ए-करीम ने मुर्दा, बहता हुआ ख़ून, सूअर का गोश्त और अल्लाह के अतिरिक्त किसी ग़ैर के नाम पर ज़िबह किया जाने वाला जानवर हराम क़रार दिया है। (सूर: अल् अनाम : 146)

क़ुरआन-ए-करीम की वर्णन की गई इन चार वस्तुओं को हराम कहा जाता है। जबकि कुछ वस्तुओं के खाने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है उनको मना कहा जाता है। जैसे जो जानवर शिकारी है वह मना है। इस में दरिंदे, शिकारी परिंदे इत्यादि सब दाख़िल हैं। इन वस्तुओं की मनाही हदीसों पर आधारित है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है

نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ وَعَنْ كُلِّ ذِي مِخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ

(صحیح مسلم کتاب الصَّيْدِ وَالذَّبَائِحِ وَمَا يُؤْكَلُ مِنَ الْحَيَوَانِ باب تَحْرِيمِ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ...)

अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर कुचलियों वाले दरिंदे और पंजों वाले परिंदे का खाना मना क़रार दिया है। इसी तरह हदीस में आया है

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ

(صحیح بخاری کتاب المغازی باب غَزْوَةِ خَيْبَرَ)

अर्थात हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर के युद्ध के अवसर पर पालतू गधों का गोश्त खाने से मना फ़रमाया।

हराम और मनाही की वज़ाहत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं:

"यह बात याद रखनी चाहिए कि शरीयत-ए-इस्लामीया में जिन वस्तुओं के खाने से मना किया गया है वह दो किस्म की हैं। अव्वल हराम, दोम निषेध। शब्दकोष में तो हराम का लफ़्ज़ दोनों किस्मों पर हावी है। लेकिन क़ुरआन-ए-करीम ने इस आयत (अल् बक़र: : 174) में केवल चार चीज़ों को हराम क़रार दिया है। अर्थात मुर्दार, ख़ून, सूअर का गोश्त और वे समस्त चीज़ें जिन्हें अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और के नाम से नामित कर दिया गया हो। इनके अतिरिक्त भी शरीयत में कुछ और चीज़ों के इस्तिमाल से रोका गया है। लेकिन वे चीज़ें निषेध की लिस्ट में तो आएँगी, क़ुरआन की भाषा के अनुसार हराम नहीं होंगी।

यह आदेश इस आयत या दूसरी आयात के मज़मून के वपरीत नहीं हैं। क्योंकि जिस तरह आदेश कई किस्म के हैं कुछ फ़र्ज़ हैं, कुछ वाजिब हैं और कुछ सुन्नत हैं। इसी तरह वर्जित की भी कई किस्में हैं। एक वर्जित मोहरिमा है और एक वर्जित माने है और एक वर्जित तन्ज़ीही है। अत: हराम चार वस्तुएं हैं बाक़ी मना हैं और उनसे भी ज़्यादा वे हैं जिनके सम्बन्ध में वर्जित तन्ज़ीही है अर्थात बेहतर है कि इन्सान उनसे बचे। हराम और मना में वही सम्बन्ध है जो फ़र्ज़ और वाजिब में है। अत: जिन वस्तुओं को

क़ुरआन-ए-करीम ने हराम कहा है उनकी हुर्मत ज़्यादा सख़्त है और जिन से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना किया है वे हुर्मत में उनसे निसबतन कम हैं। और जैसा कि मैंने बताया है आदेशों में उनकी मिसाल फ़र्ज़ और वाजिब और सुन्नत की सी है हराम तो फ़र्ज़ के स्थान पर है और मना आवश्यक के स्थान पर। जिस तरह फ़र्ज़ और वाजिब में अंतर उनकी सज़ाओं की दृष्टि से किया जाता है इसी तरह जिन वस्तुओं की हुर्मत क़ुरआन-ए-करीम में आई है यदि इन्सान उन को इस्तिमाल करेगा तो उस की सज़ा ज़्यादा सख़्त होगी। और जिनसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है उनके इस्तिमाल से इस से कम दर्जा की सज़ा मिलेगी लेकिन बहर-ए-हाल दोनों जुर्म क़ाबिल गिरिफ़्त और अल्लाह तआला की नाराज़गी का मूजिब होंगे। हराम कार्य करने से इन्सान के ईमान पर असर पड़ता है और इस का नतीजा लाज़िमन बुराई होती है। लेकिन दूसरी चीज़ों के इस्तिमाल का नतीजा लाज़िमन बदी और बेईमानी के रंग में नहीं निकलता। इसलिए देख लो। मुसलमानों में से कुछ ऐसे फ़िरक़े जो इन वस्तुओं को मुख़्तलिफ़ तावीलात के ज़रीये जायज़ समझते और उन्हें खा लेते हैं जैसे मालकी, उनका असर उनके ईमान पर नहीं पड़ता और उनमें बेईमानी और बदी पैदा नहीं होती। बल्कि पिछले समय में तो उनमें अल्लाह के पवित्र बंदे (अवतार) भी पैदा होते रहे हैं। लेकिन ख़िंज़ीर का गोश्त या मुर्दार खाने वाला कोई व्यक्ति अल्लाह के पवित्र बंदा (अवतार) नज़र नहीं आएगा। अत: हुर्मत के भी मदारिज हैं और उन चारों हराम चीज़ों के अतिरिक्त बाक़ी समस्त ममनूआत हैं जिनको आम इस्तिलाह में हराम कहा जाता है अन्यथा क़ुरआन की इस्तिलाह में वे हराम नहीं हैं।" (तफ़सीर कबीर भाग 2 पृष्ठ 340)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो हलाल-ओ-हराम का फ़लसफ़ा वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन में आया है-

اَتَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ

यह ख़ुदा पर झूठा आरोप लगाना है कि यह हलाल है या हराम। ख़ुदा ने फ़रमाया है:

حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللّٰهِ۔

हदीस शरीफ़ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो जानवर शिकारी है वह हराम है। इस में दरिंदे, शिकारी पक्षी इत्यादि सब शामिल हैं। अब इस से ज़्यादा कोई प्राधिकारी नहीं कि किसी को हलाल और हराम कहे। परन्तु दुनिया में चूँकि हज़ारों जानवर हैं फिर यह दिक़्क़त हुई कि अब किसे खाएं और किसे न खाएं। इस मुश्किल को अल्लाह तआला ने निहायत आसानी से हल कर दिया है।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ۔

अर्थात हलाल पवित्र खाओ। अब जबकि यह बता दिया कि जो चीज़ तुय्यब हो वह खाओ इसलिए हर जगह हर क़ौम में जो चीज़ें उम्दा और पवित्र हों और शरीफ और शिष्टाचारी लोग खाते हो वे खा लो। इस

में वह इस्तिस्ना जो पहले वर्णन हो चुके उनका मलहूज़ रखना निहायत ज़रूरी है। तोता खा लेने में कोई हर्ज नहीं मालूम होता है। परन्तु मैं नहीं खाया करता क्योंकि हमारे मुल्क के शारीफ नहीं खाते एक दफ़ा एक साहिब मेरे सामने (गोह) पक्का कर लाए कि खाइए मैंने कहा आप बड़ी ख़ुशी से मेरे दस्तरखान पर खाइए परन्तु मैं नहीं खाऊंगा क्योंकि शरीफ लोग इसे नहीं खाते।"

(अख़बार नंबर 19 भाग 10 तिथि 9 मार्च 1911ई. पृष्ठ 1)

प्रश्न :एक महिला ने हज़रत ख़लीफ़ तुल-मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला की मज्लिस इर्फ़ान में वर्णित एक इरशाद के हवाले से चचा और मामूं से पर्दा करने के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से रहनुमाई की दरख़ास्त की। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 1 जून 2020 ई. में निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : आपने अपने पत्र में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला के जिस इरशाद का वर्णन किया है वह सूरत उल-नूर की आयत नंबर 32 के हवाला से मज्लिस इर्फ़ान में एक प्रशन के उत्तर में वर्णित है।

यह बात दरुस्त है कि इस आयत में वर्णन रिश्ते जिन से औरत को पर्दा न करने की रुख़स्त दी गई है, उनमें चचा और मामूं का वर्णन नहीं है लेकिन इन दोनों का शुमार मुहर्रम रिश्तों में ही होता है, जैसा कि हुज़ूर ने भी अपने इस इरशाद में फ़रमाया है। और सूरत अल् निसा में वर्णन क़ुरआन के हुक्म से भी यह साबित होता है क्योंकि इन दोनों से निकाह की हुर्मत वर्णन हुई है।

इसके अतिरिक्त अहादीस में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि उनके पूछने पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें चचा से पर्दा न करने का इरशाद फ़रमाया था। लेकिन इसके साथ पर्दा के बारे में यह बात भी पेश-ए-नज़र रहनी ज़रूरी है कि इस्लामी तालीमात के अनुसार मुहर्रम रिश्तों में भी हर दर्जा के रिश्ता से पर्दा में रुख़स्त की अलग कैफ़ीयत है। इसलिए सूरत अल् नूर में जिन मुहर्रम रिश्तेदारों से पर्दा न करने की छूट आई है, उनमें से भी हर रिश्ता की दूसरे रिश्ता से पर्दा की रुख़स्त की एक अलग सूरत होगी। इसलिए पति से पर्दा की जो रुख़स्त है वह उसी आयत में वर्णन पिता, बेटे और भाई इत्यादि से पर्दा की रुख़स्त से अलग है।

अत: जिस तरह इस आयत में वर्णन रिश्तेदारों से पर्दा की मुख़्तलिफ़ कैफ़यात हैं इसी तरह अन्य मुहर्रम रिश्तेदारों से भी पर्दा की रुख़स्त की कैफ़ीयत में अंतर है। और यही मज़मून हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला अपने मज़कूरा इरशाद में समझा रहे हैं कि चचा और मामूं जो एक ही घर में साथ रहने वाले रिश्तेदार नहीं बल्कि बाहर के लोग हैं, और यदि उनका शुमार मुहर्रम रिश्तेदारों में ही होता है, लेकिन जब वे घर में आएं तो महिलाएं जिस तरह उसी घर में साथ रहने वाले मर्दों जिन में पति, बाप, बेटे इत्यादि शामिल हैं, से पर्दा निसबतन relax होती हैं, बाहर से आने वाले मुहर्रम मर्दों की सूरत में उन्हें निसबतन कुछ ज़्यादा सावधान होना चाहिए और यदि उनके सामने चेहरा तो नहीं ढका जाता लेकिन सिर और सीने को ढाँप कर और अपने आपको सँभाल कर उनके सामने बैठने का हुक्म है। अत:

यह मज़मून है जो हुज़ूर रहमहुल्लाह तआला वर्णन फ़र्मा रहे हैं, न कि चचा और मामूं से पर्दा करने का हुक्म दे रहे हैं ।

(अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 13 नवंबर 2020)

प्रश्न : एक ख़ुतबा जुमा में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के वर्णन फ़र्मूदा एक वाक़िया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत क़तादा बिन नोमान को एक छड़ी अता फ़र्मा कर इरशाद फ़रमाया था कि इस से अपने घर में मौजूद जिन् को मार कर भगा देना' के बारे में एक महिला ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में इस वाक़िया की मज़ीद वज़ाहत की दरख़ास्त की। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 29 अगस्त 2019 ई. में इस वाक़िया की मज़ीद वज़ाहत करते हुए निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह हदीस और ऐसी दूसरी अहादीस जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या आपके सहाबा के लिए रोशनी के नमूदार होने के वाक़ियात का वर्णन है, वास्तव में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कारों पर आधारित हैं। और इस किस्म के चमत्कार अल्लाह तआला हर ज़माना में अपने नबियों की सदाक़त के लिए दिखाता रहा इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले के अंबिया की ज़िंदगियों में भी ऐसे वाक़ियात मिलते हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त के लिए भी अल्लाह तआला ने ऐसे कई वाक़ियात को ज़ाहिर फ़रमाया।

जहां तक इस हदीस में जिन् या शैतान को छड़ी से मारने का सम्बन्ध है तो इस से यह साबित करना कि जिन इन्सानों के शरीर में घुस जाते हैं और उन्हें इस तरह मारने से इन्सानों के जिस्मों से निकाला जा सकता है, बिल्कुल ग़लग बात है।

इस हदीस में जिन से मुराद कोई चोर या नुक़्सान पहुंचाने वाला कोई जानवर मुराद है जो रात के अंधेरे का फ़ायदा उठा कर हज़रत क़तादा बिन नोमान के घर घुस गया था। और जैसा कि अल्लाह तआला की यह सुन्नत है कि वह अपने अंबिया को ग़ैरमामूली तौर पर इल्म-ए-ग़ैब से नवाज़ता है, इस में भी अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहले से ख़बर दे दी थी कि हज़रत क़तादा बिन नोमान के घर कोई चोर या नुक़्सान देने वाला जानवर छिपा हुआ है, इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत क़तादा बिन नोमान को इस ख़तरे से अवगत फ़रमाते हुए उन्हें नसीहत की कि जब वह घर पहुंचीं तो उस छड़ी के साथ उस चोर या उस जानवर को मार कर भगा दें। इस लिए कुछ दूसरी कुतुब में इस वाक़िया की व्याख्या में यह बात भी वर्णन हुई है कि जब हज़रत क़तादा बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो घर पहुंचे तो उनके घर वाले सब सोए हुए थे और घर के एक कोना में एक स्याह छिपा हुआ था जिसे उन्होंने उस छड़ी से मार कर भगा दिया।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में पूछा कि कारोबार में अलग-अलग किस्म के लाभ प्राप्त करने और आकस्मिक नुक़्सानात से बचने के लिए इंशोरंस करवाने के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 11 अप्रैल 2016 ई. में जो उत्तर अता फ़रमाया, उसे निम्नलिखित वर्णन किया जाता है:-

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : इंशोरंस केवल वह जायज़ है जिस पर मिलने वाली रक़म नफ़ा-ओ-नुक़्सान में शिरकत की शर्त के साथ हो और उस में जुए की सूरत न पाई जाती हो। यदि केवल नफ़ा की भागीदारी की शर्त के साथ मिले तो सूद होने की वजह से नाजायज़ है।

इसी तरह यदि पालिसी होल्डर कंपनी के साथ ऐसा मुआहिदा कर ले कि वह केवल अपनी जमा शुदा रक़म वसूल करेगा और इस पर सूद नहीं लेगा तो ऐसी इंशोरंस करवाने में भी कोई हर्ज नहीं।

हज़रत मसीह मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने इंशोरंस और बीमा के प्रश्न पर फ़रमाया : "सूद और जुए को अलग करके दूसरे इक़रारों और ज़िम्मेदारियों को शरीयत ने सही क़रार दिया है। जुए में ज़िम्मेदारी नहीं होती। दुनिया के कारोबार में ज़िम्मेदारी की ज़रूरत है।"

(अख़बार बदर नंबर 10 भाग 2, 27 मार्च 1903 ई. पृष्ठ 76)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी एक तक़रीर में फ़रमाया : "यदि कोई कंपनी यह शर्त करे कि बीमा कराने वाला कंपनी के फ़ायदे और नुक़्सान में शामिल होगा तो फिर बीमा कराना जायज़ हो सकता है।" (अल् फ़ज़ल 7 जनवरी 1930 ई.)

"एक ख़त के उत्तर में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा या कि यह बात दरुस्त नहीं कि हम इंशोरंस को सूद की मिलौनी की वजह से नाजायज़ क़रार देते हैं। कम से कम मैं तो उसे इस वजह से नाजायज़ क़रार नहीं देता। इस के नाजायज़ होने की बहुत सी वजूहात हैं। जिनमें से एक यह है कि इंशोरंस के कारोबार की बुनियाद सूद पर है। और किसी चीज़ की बुनियाद सूद पर होना और किसी चीज़ में मेल सूद का होना उनमें बहुत बड़ा अंतर है। गर्वनमैंट के क़ानून के अनुसार कोई इंशोरंस कंपनी मुल्क में जारी नहीं हो सकती जब तक एक लाख की सिक्योरिटी गर्वनमैंट न ख़रीदे। अत: उस जगह मिलावट का प्रश्न नहीं बल्कि अनिवार्यता का प्रश्न है।

(2) दूसरे इंशोरंस का उसूल सूद है। क्योंकि शरीयत इस्लामिया के अनुसार इस्लामी उसूल यह है कि जो कोई रक़म किसी को देता है या वह भेंट है या अमानत है या शराकत है या क़र्ज़ है। भेंट है नहीं। अमानत भी नहीं, क्योंकि अमानत में कमी बेशी नहीं हो सकती। यह शराकत भी नहीं, क्योंकि कंपनी के नफ़ा और नुकसान की ज़िम्मेदारी और इस के चलाने के इख़तियार में पालिसी होल्डर शरीक नहीं। हम उसे क़र्ज़ ही क़रार दे सकते हैं और वास्तव में यह होता भी क़र्ज़ ही है। क्योंकि इस रुपया को इंशोरंस वाले अपने इरादा और इच्छा से काम पर लगाते हैं और इंशोरंस के काम में घाटा होने की सूरत में रुपया देने

वाले पर कोई ज़िम्मेवारी नहीं डालते। अत: यह क़र्ज़ है और जिस क़र्ज़ के बदले में किसी वक़्त समझौते से पूर्व इसके अंतर्गत कोई नफ़ा हासिल हो उसे शरीयत इस्लामिया की दृष्टी से सूद कहा जाता है। अत: इंशोरंस का उसूल ही सूद पर आधारित है।

(3) तीसरे इंशोरंस का उसूल इन समस्त उसूलों को जिन पर इस्लाम सोसाइटी की बुनियाद रखना चाहता है बातिल करता है। इंशोरंस को पूर्णता रायज कर देने के बाद सहयोगी आपसी है, हमदर्दी और भाई चारे का तत्व दुनिया से नष्ट हो जाता है।"

(अख़बार अल् फ़ज़ल क़ादियान तिथि 18 सितंबर 1934 पृष्ठ 5)

कुछ मुल्कों में हुकूमती क़ानून के अधीन इंशोरंस करवाना लाज़िमी कार्य होता है। ऐसी इंशोरंस करवाना जायज़ है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से एक दोस्त ने 25 जून 1942 ई. को प्रश्न किया कि यू. पी गर्वनमैंट ने हुक्म दिया है कि हर व्यक्ति जिस के पास कोई मोटर गाड़ी है वह उस का बीमा किराए क्या यह जायज़ है?

हुज़ूर ने फ़रमाया : "इस के सम्बन्ध में भी याद रखना चाहिए कि ये हुक्म केवल यू.पी गर्वनमैंट का ही नहीं बल्कि पंजाब में भी गर्वनमैंट का यही हुक्म है। यह बीमा चूँकि क़ानून के अधीन किया जाता है और हुकूमत की तरफ़ से उसे जबरी क़रार दिया गया है इस लिए अपने किसी ज़ाती फ़ायदा के लिए नहीं बल्कि हुकूमत की इताअत की वजह से यह बीमा जायज़ है।"

(अल् फ़ज़ल 4 नवंबर 1961 ई. फ़र्मूदा 25 जून 1942 ई.)

इंशोरंस के सम्बन्ध में मज्लिस इफ्ता ने निम्नलिखित सिफ़ारिश हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रहमहुल्लाह की ख़िदमत अक़्दस में पेश की जिसे हुज़ूर अनवर 23 जून 1980 ई. को मंज़ूर फ़रमाया : "हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफ़ सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के फत्वे के अनुसार जब तक सौदे सूद और जुए से पाक न हों बीमा कंपनीयों से किसी किस्म का बीमा करवाना जायज़ नहीं है। यह फत्वा स्थाई नौईयत के और न बदला जाने वाला है जबकि समय समय पर इस बात की छानबीन हो सकती है कि बीमा कंपनीयां अपने बदलते हुए क़वानीन और तरीक़-ए-कार के नतीजा में जुए और सूद की प्रक्रिया से किस हद तक पाक हो चुकी हैं।

मज्लिस इफ्ता ने इस पहलू से बीमा कंपनियों के मौजूदा तरीक़-ए-कार पर नज़र की है और इस नतीजे पर पहुंची है कि जबकि इस समय प्रचलति वैश्विक आर्थिक निज़ाम की वजह से किसी कंपनी के लिए यह संभव नहीं कि वह अपने कारोबार में क्लीन सूद से दामन बचा सके लेकिन अब कंपनी और पालिसी होल्डर के मध्य ऐसा मुआहिदा होना संभव है जो सूद और जुए के अंश से पाक हो। इसलिए इस शर्त के साथ बीमा करवाने में हर्ज नहीं कि बीमा करवाने वाला कंपनी से अपनी जमा शूदा रक़म पर कोई सूद वसूल न करे।" (रजिस्टर फ़ैसलाजात मज्लिस इफ्ता पृष्ठ 60 जो प्रकाशित नहीं हुआ)

☆ ☆ ☆

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
H&O & FACTORY:20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Asifbhai Mansoori
9998926311
Sabbirbhai
9925900467
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover
E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123
B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS
21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

मज्लिस अत्फ़ालुल अहमदिया कैनेडा की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ पहली Virtual क्लास

पिछले तीन वर्षों से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की बाबरकत सोहबत से मुस्तफ़ीज़ होने के उद्देश्य से मज्लिस अत्फ़ालुल् अहमदिया कैनेडा के मैंबरान पर आधारित प्रतिनिधि मंडल बर्तानिया उपस्थित होते रहे हैं। अलहमदु लिल्लाह।

लेकिन पिछले वर्ष 2020 में कौवीड की विश्व्यापी महामारी के कारण से यह मुबारक यात्रा स्थगित करनी पड़ी। इस आधार पर अत्फ़ाल बहुत मायूस थे लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी मायूसी को इस तरह ख़ुशियों में बदल दिया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने उन्हें ऑनलाइन मुलाक़ात का सौभाग्य प्रदान फ़रमाया।

15 अगस्त 2020 शनिवार के दिन कैनेडा भर से ख़ुशनसीब अत्फ़ाल अपने इमाम की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए पीस वेलेज् पहुंचना शुरू हुए। अलहमदु लिल्लाह। एक दूसरे से फ़ासले पर खड़े ये बच्चे जबकि अपने भाईयों से प्रेम के प्रकट के लिए न हाथ मिला सकते हैं और न ही गले मिल सकते हैं लेकिन फिर भी ख़ुश हैं कि हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

सब इंतिज़ामात मुकम्मल हो चुके थे। अत्फ़ाल समाजी दूरी की एहतियात के साथ अपनी अपनी जगहों पर बैठे दुआओं और इस्तिग़फ़ार में व्यस्त थे कि अचानक प्यारे हुज़ूर की शफ़क़त भरी आवाज़ हमारे कानों से टकराई। सिर उठा कर देखा तो हुज़ूर-ए-अनवर का रोशन और मुनव्वर चेहरा हमारे सामने टी.वी पर मौजूद था। इस लम्हे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे हुज़ूर अनवर की बरकत से हमारे पास भी फ़रिश्तों का नुज़ूल हो रहा है और उन फ़रिश्तों ने मानो समस्त इंतिज़ामात अपने हाथ में लेकर उनको पूर्णता तक पहुंचाना शुरू कर दिया है।

हुज़ूर-ए-अनवर को टी.वी पर देखना किसी अहमदी के लिए नई बात नहीं लेकिन आज की मज्लिस इस लिहाज़ से अलग थी कि हुज़ूर कैनेडा में मौजूद अपने ख़ुद्दाम को टेलीविज़न के माध्यम से देखते हुए उनसे सम्बोधित भी हो रहे थे। ख़लीफ़-ए-वक़्त इतिहास में पहली बार किसी virtual मीटिंग को अपनी मौजूदगी से सरफ़राज़ फ़र्मा रहे थे। इस मुलाक़ात के बहुत से लमहात यादगार ठहरे। हुज़ूर अनवर की अत्फ़ाल पर शफ़क़त और अत्फ़ाल की अपने आक़ा से मुहब्बत साफ़ ज़ाहिर थी। मैंने इस लम्हा में इस बात पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया कि आज मैं जमाअत अहमदिया में शामिल हूँ। अलहमदु लिल्लाह

हमने सोचा कि नज़म को प्रोग्राम में न रखा जाए ताकि अत्फ़ाल को ज़्यादा से ज़्यादा हुज़ूर अनवर से रहनुमाई प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध हो सके। लेकिन हमने फिर भी एहतियातन एक तिफ़्ल को नज़म की तैयारी भी करवा रखी थी। जब तिलावत हो चुकी और इस का अनुवाद भी प्रस्तुत हो गया तो हुज़ूर

अनवर ने हमसे पूछा कि क्या नज़म का इंतिज़ाम नहीं है? मुझे तो ऐसा लगा मानो किसी ने मुझे झिंझोड़ दिया हो। मैंने हुज़ूर अनवर को उत्तर में अर्ज़ किया कि जी हुज़ूर इंतिज़ाम है।

इस क्लास के लिए ऐवान ताहिर में 162 और बैतुल-इस्लाम में 62 अत्फ़ाल बैठे थे। इसी तरह क्लास के दौरान इन दोनों जगहों पर अत्फ़ाल के अतिरिक्त 20 रज़ाकार (स्वयंसेवक) भी डयूटी पर मौजूद थे।

हुकूमती इंतिज़ामिया की ओर से जारी करदा समस्त हिदायात को दृष्टिगत रखते हुए क्लास के आग़ाज़ पर अत्फ़ाल को अपनी-अपनी जगहों पर बिठाया गया और हर लम्हा Physical Distancing की हिदायात को दृष्टिगत रखा गया। इसी तरह क्लास ख़त्म हो जाने के बाद भी एहतियात के तक़ाज़ों के पेश-ए-नज़र एक-एक कर के अत्फ़ाल को हाल में से बाहर भिजवाया गया।

यह क्लास हुज़ूर अनवर की मुस्कुराहटों और मोहब्बतों से परिपूर्ण थी। हम पूरा एक घंटा हुज़ूर अनवर की बाबरकत सोहबत में रहे। हुज़ूर अनवर का इतना वक़्त हमारे लिए निर्धारति करना और हमारे मध्य मौजूद रहना हमारे लिए निहायत ख़ुशी और शरफ़ का कारण था। क्लास के आयोजन से पूर्व एक वह वक़्त था कि इंतिज़ार में वक़्त ही नहीं गुज़रता था और जब क्लास शुरू हो गई तो पता ही नही लगा और एक घंटा मानों पल-भर में गुज़र गया। सबकी यह इच्छा थी कि काश यह क्लास कुछ देर और जारी रहती। लेकिन जो भी वक़्त हमें उपलब्ध आया अल्लाह तआला का इस पर लाख लाख शुक्र है।
दौरान-ए-क्लास तिलावत और नज़म के बाद अत्फ़ाल ने अपने प्यारे आक़ा से प्रश्न पूछ कर विभिन्न विषयों के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त किया।

क्लास के बाद अत्फ़ाल के चेहरों से ख़ुशी झलक रही थी। सब का यही कहना था कि हमें ऐसा महसूस हो रहा था कि हुज़ूर अनवर हमारे मध्य मौजूद हैं। संसार के मौजूदा हालात के कारण से यात्रा की पाबंदियों को देखकर हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि हमें हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य नसीब हुआ। हम ख़िलाफ़त जैसी महान नेअमत के लिए ख़ुदा तआला का जितना शुक्र करें कम है। ख़िलाफ़त हर लम्हा और हर क़दम पर हमारे लिए ढाल और हमारे लिए हिफ़ाज़त के सामान पैदा करती है। ख़िलाफ़त से जुड़े रहने से ही हक़ीक़ी ज़िंदगी प्राप्त होती है।

सम्मिलित होने वालों के विचार

इस क्लास में शामिल होने वाले अत्फ़ाल ने जिन भावनाओं का प्रकट किया उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

*सलमान काहलों कहते हैं कि जबकि मैं प्रश्न नहीं कर सका लेकिन केवल हुज़ूर के सामने मौजूद होना मेरे लिए ऐसा था जैसे कोई स्वप्न पूरा हो गया अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर को सेहत वाली लंबी आयु अता फ़रमाए। आमीन

*इन्तेसार नसरुल्लाह ने कहा कि मैं समझता हूँ कि हुज़ूर का इस क्लास के लिए वक़्त निकालना और अत्फ़ाल के साथ सम्बोधित होना, नाक़ाबिल-ए-यक़ीन बात है। जबकि हुज़ूर अनवर हमारे मध्य नहीं थे, लेकिन इस के अतिरिक्त इस बात का एहसास होता था कि मैं इमाम-ए-वक़्त के सामने मौजूद हूँ। मैं सआदत-मंद रहा कि मुझे हुज़ूर अनवर से प्रश्न करने का भी अवसर मिला। मैं बहुत ख़ुश था और अपने आपको ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि मुझे हुज़ूर से बात करने का अवसर मिला।

* नूर ग़ालिब अहमद ने बताया कि मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि मैं इस तारीख़ी क्लास का हिस्सा बना। जब मैंने हुज़ूर को देखा तो मेरी आँखें (हुज़ूर के नूर से) रोशन हो गईं, मैं चाहता था कि मैं हुज़ूर के गले लग जाऊं परन्तु इस महामारी के कारण शायद यह फ़िलहाल सम्भव नहीं। मैं चाहता था कि मैं हुज़ूर को आख़िर में अपनी Open Heart Surgery के लिए दुआ के लिए कहूं परन्तु वक़्त ख़त्म हो गया और मैं नहीं कह सका।

* अताउल हई साहिब कहते हैं मैं सबसे ज़्यादा ख़ुश-क़िस्मत तिफ़्ल हूँ कि मुझे इस क्लास में शामिल होने का अवसर मिला। बराए मेहरबानी इस तरह के और भी प्रोग्राम बनाएँ।

* सफ़ीर अहमद अली मिर्ज़ा ने अपने भावनाओं का प्रकट कुछ इस तरह किया : अल्हम्दुलिल्ला, यह ऐसे था जैसे मेरा कोई स्वप्न पूरा हो गया हो। मैं सदैव चाहता था कि हुज़ूर के साथ इन क्लासों में शामिल हूँ। मुझे अभी भी यक़ीन नहीं आ रहा कि मुझे हुज़ूर अनवर की मौजूदगी में, उनके सामने नज़्म पढ़ने का सौभाग्य मिला। अल्लाह तआला मुंतज़ेमीन, रज़ाकारों और M.T.A की टीम पर फ़ज़्ल करे जिन्होंने इस को सम्भव बनाया। जज़ाकुमुल्लाह।

इसी तरह माता पिता से प्राप्त होने वाले कुछ विचार भी निम्नलिखित हैं:

* आदरणीया फ़हमीदा मुज़फ़्फ़र साहिबा कहती हैं कि मुझे बहुत ख़ुशी है कि मेरे बेटे को केवल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस तारीख़ी प्रोग्राम में शामिल होने का अवसर मिला। मैं मुंतज़मीन के प्रयासों का बहुत धन्यवाद अदा करना चाहती हूँ जिन्हों ने इस प्रोग्राम को सफ़ल बनाया। धन्यवाद ख़ुदा आप को इसका उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

* आदरणीय एजाज़ ख़ान साहब और अम्तुल क़ुद्दूस साहिबा ने कहा कि हमें लगता है जैसे कोई स्वप्न पूरा हो गया हो। हमारा बेटा इस वर्ष UK ट्रिप पर नहीं जा सका लेकिन इस क्लास के कारण से उस को हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में हाज़िर होने और हुज़ूर अनवर के साथ बात करने का अवसर मिल गया। अल्हम्दुलिल्ला

* आदरणीया सना अहमद साहिबा ने वर्णन किया कि मैं ख़ुदा तआला का बहुत एहसान समझती हूँ कि मेरे बेटे को इस क्लास में शामिल होने का सौभाग्य मिला। मैं बहुत ख़ुश और भावनाओं से परिपूर्ण हूँ। मैं दुआ करती हूँ कि यह महामारी जल्द ख़त्म हो और बच्चों को हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में स्वयं शामिल होने का

अवसर मिले और वे बरकतों से मुस्तफ़ीद हो सकें। आमीन। जज़ाकल्लाह

* आदरणीय अताउल क़ुद्दूस साहिब ने बताया कि इस क्लास के बाद मेरा बेटा जमाअत की ख़िदमत के लिए क़दम आगे बढ़ा रहा है। वह बहुत भावनाओं से परिपूर्ण है मानो एक नई रूह उस के अंदर आ गई हो।

* आदरणीया अम्तुल हफ़ीज़ हिना मिर्ज़ा साहिबा कहती हैं कि अल्हम्दुलिल्ला, हम ख़ुदा तआला के बहुत मशकूर हैं, ख़ुश भी हैं और ख़ुदा का फ़ज़ल महसूस कर रहे हैं और अभी तक इन बरकात को समेट रहे हैं जो मेरे बेटे को इस अलग प्रोग्राम में शामिल होने के कारण प्राप्त हुए।

मज्लिस अत्फ़ालुल् अहमदिया और मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया के मैंबरान नैशनल आमिला और क्लास के इंतिज़ामात के लिए डयूटी पर निर्धारित रज़ाकार उन की जानिब से भी विचार प्राप्त हुए जो कि निम्नलिखित हैं :

* आदरणीय नस्र सिद्दीक़ी साहिब ने कहा कि यह मेरे लिए गर्व की बात थी कि मैं इस क्लास का हिस्सा बन सका। अलहमदु लिल्लाह। हुज़ूर अनवर को अत्फ़ाल से बात करते हुए देखना मेरे लिए ख़ुशी और सौभाग्य का कारण था।

* आदरणीय नवीदुल इस्लाम साहिब कहते हैं कि हमारी इच्छा है कि हमें इस तरह के मज़ीद अवसर भी उपलब्ध आएं।

* आदरणीय फ़हद चठ्ठा साहिब ने कहा कि अलहमदु लिल्लाह, हमारे लिए यह पूरे वर्ष का एक नुमायां अवसर था हुज़ूर अनवर ने पूरा एक घंटा हमारे लिए निर्धारित किया और हमें महत्वपूर्ण हिदायात से नवाज़ा।

* आदरणीय रूमी साही साहिब कहते हैं कि अल्हम्दुलिल्ला विनीत ख़ुद्दाम की नैशनल आमिला में है, और यह मेरे लिए बहुत बाबरकत बात थी कि में इस क्लास का हिस्सा बना हूँ। ऐसा महसूस हो रहा था कि हुज़ूर अनवर हमारे सामने मौजूद हैं। यह रुहानी लिहाज़ से भी हमारे लिए तरक़्क़ी का कारण बना है। मैं निहायत धन्यवादी हूँ इस क्लास का हिस्सा बनने के लिए।

* आदरणीय तौसीफ़ रिहान साहिब ने बताया कि मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे हुज़ूर अनवर के साथ क्लास का हिस्सा बनने का शरफ़ प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर ने अत्फ़ाल के साथ बहुत शफ़क़त का सुलूक फ़रमाया। हुज़ूर अनवर की सोहबत हमारी रूहानियत की तरक़्क़ी का कारण बनी है। अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर की हिदायात पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

* आदरणीय इफ़्तिख़ार अहमद साहिब ने कहा कि क्लास का माहौल ऐसा ही था जैसे कि हम शारीरिक रूप से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में हाज़िर हैं। यू.के से जुड़े समस्त एहसासात और भावनाएं वापस आ रही थीं।

(रिपोर्ट : ज़ुबैर अफ़ज़ल, सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया कैनेडा)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 21 अगस्त 2020)

☆ ☆ ☆

नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह हॉलैंड और नौमुबाईनात और विद्यार्थियों की अपने प्यारे इमाम से वर्चूअल मुलाक़ात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात ने शरीर में एक नई रूह फूंक दी मैंने बहुत अच्छे प्रश्न और उनके बहुत सुन्दर उत्तर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से सुने

लजना इमाइल्लाह हॉलैंड के सालाना प्रोग्राम के अनुसार माह अप्रैल 2020 में हमारे एक वफ़द ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए यू के की यात्रा करनी थी। सब इंतिज़ामात मुकम्मल थे लेकिन यह मुबारक यात्रा कोविड की वजह से स्थगित करनी पड़ी जिसकी वजह से सब पर एक उदासी की कैफ़ियत तारी हो गई। लेकिन प्यारे आक़ा ने वर्चूअल मुलाक़ात का अवसर अता करके हमारी मायूसी को ख़ुशियों में बदल दिया। प्रोग्राम की कामयाबी के लिए हुज़ूर अक़्दस की ख़िदमत में दुआ के लिए पत्र लिखे गए और सद्कात भी दिए गए।

प्रोग्राम के अनुसार तिथि 22 अगस्त 2020 ई. यूरोप की पहली ऑनलाइन मीटिंग का आरंभ हॉलैंड के स्थानीय समय के अनुसार 1 बजकर 45 मिनट पर हुई। मीटिंग में नैशनल मज्लिस-ए-आमला की 20 मेमब्रात शामिल हुईं। हुज़ूर अनवर ने दुआ के साथ मीटिंग का आरंभ फ़रमाया। एक घंटे की इस मुलाक़ात में नैशनल आमिला की सब मेमब्रात ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए अपने विभाग के बारे में रहनुमाई हासिल की। मीटिंग के अंत पर मज्लिस-ए-आमला की सभी मेमब्रात की ख़ुशियां देखने योग्य थीं। कुछ मेमब्रात के विचार निम्नलिखित हैं।

* मुबारका शकील साहिबा नैशनल सैक्रेटरी सनअत-ओ-तिजारत ने कहा : अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमें प्यारे हुज़ूर के साथ मुलाक़ात करने और प्यारे हुज़ूर की कीमती उपदेश को लाईव सुनने का अवसर मिला। अलहमदु लिल्लाह। यह मेरी ज़िंदगी का एक अनमोल दिन है। ख़ुदा करे हम इन आदेशों पर अमल करने वाली हों। आमीन ।

* रूबीना अज़हर साहिबा नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत ने कहा : प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात ने शरीर में एक नई रूह फूंक दी है। प्यारे आक़ा के दिए गए टार्गेट्स की रोशनी में काम करने का जज़बा एक नई रूह के साथ जाग गया। समस्त मज्लिस-ए-आमला की मेमब्रात के साथ मुशफ़िक़ाना प्यार भरे अंदाज़ और हिक्मत से नसीहत करना साबित करता है कि प्यारे हुज़ूर वास्तव में A Man of God हैं।

* शमीम मज़हर साहिबा नायब सदर लजना इमाइल्लाह हॉलैंड ने कहा : अल्हम्दुलिल्ला, पुन: अल्हम्दुलिल्ला कि आज हमें प्यारे हुज़ूर अक़्दस से मुलाक़ात की तौफ़ीक़ मिली और उसने प्यारे हुज़ूर की सीधी हिदायात सुनने की तौफ़ीक़ दी। अल्लाह तआला हमें प्यारे हुज़ूर की आदेशों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

यह दो दिन लजना इमाइल्लाह हॉलैंड के लिए बहुत बाबरकत थे जिन में अपने प्यारे ख़लीफ़ा अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात हुई। हम सब ने ज़ाती तौर पर ख़लीफ़ा वक़्त की जमाअत के लिए मुहब्बत का नज़ारा देखा। अलहमदु लिल्लाह।

नौमुबाइआत और विद्यार्थियों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

23 अगस्त 2020 ई. को जमाअत अहमदिया हॉलैंड की कुछ विद्यार्थियों और नौमुबाईनात को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुलाक़ात का आरंभ हॉलैंड के स्थानीय समय के अनुसार 1 बजकर 43 मिनट पर हुआ। प्रोग्राम के आरंभ में आदरणीया अमीना अहमद साहिबा ने सूरत अल् तग़ाबुन की कुछ आयात तिलावत कीं और इसके बाद उस का डच अनुवाद प्रस्ततु किया। जिसके बाद आदरणीया नौरीन रज़ा साहिबा ने उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया। दो बहनों अम्तुल नूर महमूद और शाफ़िया महमूद ने कविता हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तरन्नुम से प्रस्तुत की जबकि डच नज़म एग्नस सटीरिक ने सुनाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने प्रशन करने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई। इस मरहले का आरंभ एक कुर्द नौमुबाईन बहन के हुज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में प्रशन पेश करने से हुआ। इसके बाद अन्य नौमुबाईनात और विद्यार्थियों ने प्यारे हुज़ूर की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ प्रकार के प्रश्न प्रस्तुत कर के रहनुमाई हासिल की। यह बाबरकत मज्लिस क़रीबन एक घंटा रही। 2 बजकर 40 मिनट पर क्लास का अंत हुआ। सब विद्यार्थियों और नौमुबाईनात के चेहरों प्रसन्न थे कि उन्हें इन हालात में भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात कर के रहनुमाई लेना नसीब हुआ। यह केवल अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल और हुज़ूर-ए-अनवर की शफ़क़त की बदौलत ही संभव था। कुछ के तास्सुरात निम्नलिखित हैं।

* ग़ज़ाला मुज़फ़्फ़र साहिबा ने कहा कि मैं लफ़्ज़ों में वर्णन नहीं कर सकती कि मैं कितनी शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे हुज़ूर-ए-अनवर के साथ एक-बार नहीं बल्कि दो बार मुलाक़ात करने का अवसर मिला। एक दफ़ा मज्लिस-ए-आमला की मैंबर होने की हैसियत से और एक दफ़ा विद्यार्थी होने की हैसियत से। जब मुझे यह इलम हुआ कि हम अप्रैल में इंगलैंड नहीं जाएंगी तो बहुत उदास हुई। लेकिन इस मुलाक़ात ने सब कुछ भुला दिया। हुज़ूर अनवर ने हर प्रशन का उत्तर बहुत ख़ूबसूरती से दिया। केवल मज़हबी मुआमलात पर ही नहीं बल्कि दुनियावी मुआमलात पर भी बहुत सारी हिदायात दीं। यह बहुत ही ख़ूबसूरत अनुभव था।

* बक्कतुल नूर महबूब साहिबा ने कहा कि आज अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़ल के साथ ख़ाकसार को हुज़ूर अक़्दस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल तआला की मुबारक सोहबत में बैठने की तौफ़ीक़ मिली। हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात बहुत ही ख़ूबसूरत, इतिहासिक और ईमान अफ़रोज़ थी।

कुछ नौमुबाईनात के विचार इस तरह हैं:

* हियु बॉमर और अमीना अहमद ने कहा : मैं बहुत ख़ुश हूँ, सब कुछ बहुत बेहतरीन हो गया अल्हम्दुलिल्ला। मुझे अपना प्रशन पूछने का अवसर मिला और बहुत ही ख़ूबसूरत उत्तर मिला। मैं इस के लिए अल्लाह तआला की बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

* आर्यन मजीद साहिबा ने कहा : मैं इस प्रोग्राम से बहुत लुतफ़ अंदोज़ हुई हूँ। शुरू में, मैं बहुत डरी हुई थी। मैंने बेहतरीन प्रश्न और उनके ख़ूबसूरत उत्तर सुने। अनुवाद का इंतिज़ाम बहुत अच्छा था। मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल तआला का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि उन्होंने हमें वक़्त दिया।

* साबिरीया मजीद साहिबा ने कहा : मैं अलमेरे जमाअत की एक कुर्द महिला हूँ। यह मुलाक़ात बहुत दिलचस्प थी। मैंने बहुत उम्दा प्रश्न और हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से उन के बहुत ख़ूबसूरत उत्तर सुने। मैं यहां अपनी बेटी, पिता, बहन, कज़न और एक दोस्त के साथ आई हूँ। मैं हुज़ूर-ए-अनवर का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि उन्होंने हमें वक़्त दिया।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह प्यारे हुज़ूर को सेहत-ओ-तंदरुस्ती वाली लम्बी आयु अता फ़रमाए और अफ़राद-ए-जमाअत के हिस्से में हमेशा अपने प्यारे इमाम से मुलाक़ात और उनसे सीधे रहनुमाई हासिल करने की सआदत क़ायम-ओ-दाइम रखे। आमीन (अतीया असलम, सदर लजना इमाइल्लाह हॉलैंड)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 28 अगस्त 2020)

पृष्ठ 28 का शेष

महसूस हो रहा था कि जैसे हमारे प्यारे इमाम सय्यदना हुज़ूर अनवर हमारे साथ रौनक अफ़रोज़ हैं।

मुलाक़ात में सम्मिलित होने वालों की प्रतिक्रियाएं

इस मुलाक़ात के बाद समस्त मेमब्रात-ए-आमिला ख़ुशी, शुकर और एहसास ज़िम्मेदारी की भावना से मामूर थीं। कुछ मेमब्रात की प्रतिक्रिया निम्नलिखित हैं :

* सैक्रेटरी नौ-मुबाइआत ने कहा : जब हुज़ूर अनवर स्क्रीन पर आए तो ऐसे महसूस हुआ जैसे मैं तुरंत एक रुहानी माहौल में दाख़िल हो गई हूँ और एक ख़ास असर ने मुझे चारों तरफ़ से घेर लिया हो। मैंने दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू किया। मुझे आशा नहीं थी कि सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर से इस मुलाक़ात का आरंभ मुझ से करेंगे। जैसे ही हुज़ूर-ए-अनवर ने मुझसे बात करनी शुरू की तो ऐसा लगा कि जैसे यहां कोई और दूसरा मौजूद नहीं है सिवाए मेरे और मेरे आका के। हुज़ूर-ए-अनवर ने जो प्रश्न मेरे ज़हन में था, मेरे पूछने से पहले ही इस पर रह नुमाई फ़र्मा दी। निसंदेह यह सब अल्लाह तआला के निर्धारित करदा इमाम वक़्त की फ़िरासत ही का नतीजा है।

* सैक्रेटरी माल ने कहा : मीटिंग बहुत ईमान अफ़रोज़ थी। मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत महसूस करती हूँ कि मैंने इस मुलाक़ात से अपने विभाग को बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ सीखा। मेरी ख़ाहिश है कि हम साल में कम अज़ कम एक-बार प्यारे आक़ा से इस तरह मुलाक़ात कर सकें।

* सैक्रेटरी उमूर-ए- तोलबा ने कहा : यह मुलाक़ात मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी और अलग घटना थी। यह मुलाक़ात मेरे अंदर रुहानी तबदीली लाने और मेरे प्यारे ख़लीफ़ा वक़्त के साथ मेरी मुहब्बत में इज़ाफ़ा का बायस बनी है।

(अम्तुल सलाम मलिक, सदर लजना इमाइल्लाह कनेडा) (अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 4 सितंबर 2020)

☆ ☆ ☆

नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह कैनेडा की अपने प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन से वर्चूअल मुलाक़ात

मीटिंग बहुत ईमान अफ़रोज़ थी, मैंने इस मुलाक़ात से अपने विभाग को बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ सीखा (सैक्रेटरी माल)

मुलाक़ात से पहले मेरी हालत एक ऐसे खोए हुए बच्चे की तरह थी जिसे मालूम ही नहीं कि किधर जाना है,

मुलाक़ात के बाद मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे प्यारे हुज़ूर ने मुझे रास्ता दिखा दिया (सैक्रेटरी तब्लीग़)

मैं अपने काम को बेहतर बनाने के लिए अपने अंदर एक नया जोश और जज़बा महसूस कर रही हूँ (सैक्रेटरी ख़िदमत-ए-ख़लक़)

यह एक ऐसा यादगार अनुभव था जिसने मेरे दिल को विनम्रता और सादगी, ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी की भावना से भर दिया, मुझे दीन की ख़िदमत बजा लाने और अपने महबूब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आशाओं पर पूरा उतरने के लिए मज़ीद लगन और मेहनत के साथ काम करने का हौसला दिया है (सैक्रेटरी तर्बीयत)

प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की विनम्रता और आज्ञा से मज्लिस लजना इमाइल्लाह कैनेडा मार्च 2020 को यू.के की यात्रा करनी थी 29 मार्च 2020 को हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात थी, लेकिन कोविड की वजह से इस यात्रा को मुल्तवी करना पड़ा। हमारे दिल दुखी और तबीयतें उदास थीं। हम दुआओं में लग गए कि ख़ुदा तआला अपनी ओर से मुलाक़ात की कोई सूरत पैदा कर दे। अभी दुनिया को तो इस बिमारी से मुकम्मल तौर पर निजात नहीं मिली थी लेकिन हमारी ख़ुशक़िसमती कि हमें प्यारे हुज़ूर से मुलाक़ात की खुशखबरी ज़रूर मिल गई। ख़ुदा तआला ने हमारी दुआएं सुन लीं और हमारे प्यारे आक़ा ने हम आजिज़ ख़ादिमात की दिल की संतुष्टि के लिए ऑनलाइन मुलाक़ात की मंज़ूरी दे दी। अल्हमदु लिल्लाह। हमारी ख़ुशीयों का कोई ठिकाना न रहा। 16 अगस्त 2020 इतवार के दिन दोपहर डेढ़ बजे जामिआ अहमदिया ताहिर हाल में हमारी हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात थी। अल्हमदु लिल्लाह कल अट्ठाईस मेमब्रात में से सत्ताईस मेमब्रात उचित हिफ़ाज़ती तदाबीर के साथ निर्धारति समय पर पहुंच कर कमरे में अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ गईं। हमारी ख़ुशकिस्मती कि आमला की मैंबर्ज़ की सय्यदना हुज़ूर अनवर के साथ इस तारीख़ी मुलाक़ात में ख़ानदान-ए-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चशम-ओ-चिराग़ आदरणीया श्रीमती साहबज़ादी बी-बी अम्तुल जमील बेगम साहिबा बेटी नेक अख़तर सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो भी हमारे साथ माननीय मैंबर की हैसियत से मौजूद थीं।

ठीक डेढ़ बजे स्क्रीन पर प्यारे आक़ा का मुस्कुराता हुआ नूरानी चेहरा प्रकट हुआ तो सब आमिला मैंबर्ज़

ने खड़े हो कर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को सलाम किया। जिस पर हुज़ूर अक़्दस ने बड़े प्यार से उत्तर देते हुए सबको बैठ जाने को फ़रमाया और ख़ाकसार से मीटिंग के बारे में इस्तिफ़सार करने के बाद फ़रमाया कि चलें दुआ से मीटिंग शुरू करते हैं। दुआ के बाद ख़ाकसार के दाएं बाएं बैठी हुई मेमब्रात का परिचय हुआ तो सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर ने नायब सदर साहिबा और नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत नौ-मुबाइनात से अपनी बात चीत का आरंभ फ़रमाया और फिर अकेले अकेले समस्त सचिवों से उन के विभागों का जायज़ा लिया और बसीरत अफ़रोज़ हिदायात और उपदेश दिए। हमारे प्यारे इमाम ने नौ-मुबाइनात से मज़बूत राबिता रखने और उन्हें सक्रिय करने के बारे में तलक़ीन फ़रमाई। नई बैअतों को हासिल करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई और इस के लिए दाईआत (दावते इलाल्लाह करनी वालियां) की मदद से भरपूर प्रोग्राम तर्तीब देने की ज़रूरत पर-ज़ोर दिया। हुज़ूर अक़्दस ने लजना की मैंबर्ज़, बच्चीयों और बच्चों की तर्बीयत के अलग-अलग तरीक़ों और माध्यमों की तरफ़ आमिला की तवज्जा स्थानांतरित करवाई। हमारे प्यारे आक़ा ने हर विभाग को अपने कार्यों और बा बरकत नसाएह से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाया और काम को बेहतर से बेहतरीन बनाने पर-ज़ोर दिया।

हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर ने बहुत प्यार और शफ़क़त से सबकी बातें सुनी और मुस्कुरा कर सब का उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अक़्दस का अपने क़ीमती वक़्त को हमारे लिए निर्धारित करना लजना कैनेडा के लिए इंतिहाई मुसर्रत और सौभाग्य का बाइस था। निसंदेह क़ुदरत-ए-सानिया के पांचवें मज़हर को अपने मध्य पा कर हमारी ख़ुशी का कोई ठिकाना न था। एक घंटे की इस बाबरकत मज्लिस का समापन इतनी जल्दी हो जाएगा यह सोचा भी नहीं था। यह अल्लाह तआला का बेहद फ़ज़ल और अहसान है कि उसने हमें ख़िलाफ़त जैसी अज़ीमुश्शान नेअमत से नवाज़ा और ख़लीफ़ा वक़्त की शक्ल में हमें एक मुहब्बत करने वाला और सब के लिए दर्द-ए-दिल से दुआएं करने वाला बा बरकत वजूद अता फ़रमाया जो इस दज्जाली समय में हम सबकी दीनी वदुनयावी रहनुमाई करते हैं। मुलाक़ात के दिन हम सबने सदक़ा अदा किया, नफ़ल पढ़े और मुलाक़ात के वक़्त से पहले निर्धारित स्थान पर पहुंचे। यह मुबारक ऑनलाइन मुलाक़ात हमारी आशाओं से कहीं ज़्यादा बढ़ कर ख़ुशी संतुष्टि का कारण थी और ऐसा

शेष पृष्ठ 27 पर

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

SWARAJ

सलाम मोटर्स

अधिकृत विक्रेता
स्वराज ट्रेक्टर: सेल्स व सर्विस ब्यावर

मो. यूसुफ काठात
9460458032

अताउल्लाह खान
8696714040

SINCE 1974

शोरूम : मसूदा रोड, चुंगी नाका के पास, ब्यावर

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES
Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081
Guddu
Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993
Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
WASIMA STONE CRUSHER
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورۃ بنی اسرائیل آیت 31)
Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.
Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (feed back) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको को अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करता है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मजलिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं:-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806